उपसंहार

उपसंहार

प्रतिभा संपन्न नाटककार के रुप में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने अपनी पहचान बनाई हैं। उनके नाटक रंगमंच पर सफलता के साथ खेले जाते हैं।सक्सेना के नाटकों ने हिंदी नाट्य सृष्टि को अधिक सशक्त और ऊँचा बनाया है। ऐसे नाटककार का साहित्य अनुसंधानकर्ताओं के लिए एक मौलिक उपलब्धि है। सर्वेश्वर समकालीन नाटककार होने के कारण उन्होंने हिंदी रंगमंच और अभिनय दोनों को महत्व दिया है।वे नाटक को गाँव-गाँव तक पहुँचाना चाहते थे, इसीलिए उनके नाटक का संबंध अधिकतर ग्रामीण और आम जनता से रहा है।

रचनाकार का साहित्य उसके अध्ययन , मनन , चिंतन , अनुभवों का निचोड होता है। जो प्रतिभा का स्पर्श पाकर कलात्मक उँचाईयाँ प्राप्त कर अभिव्यक्ति पाता है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर दृष्टिपात करने पर स्पष्ट होता है कि सक्सेना जी का जन्म बस्ती गाँव में बीता हुआ है। अपने संघर्षशील स्वभाव के कारण उन्होंन जीवन में सफलता हासिल की। आर्थिक , सामाजिक , राजनीतिक विषमता को नजदिक से देखने तथा अनुभव करने से उनका नाटक साहित्य यथार्थ और वास्तव जीवन की अभिव्यक्ति लगता है। उनके साहित्य का महत्त्वपूर्ण तथ्य राजनीतिक व्यंग्य है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना समकालीन नाट्यसृष्टि के सशक्त नाटककार हैं। उन्होंने नाटक के साथ कविता , कहानी , उपन्यास , बाल-साहित्य ; यात्रा-साहित्य , एकांकी , संपादन आदि विभिन्न विधाओं में लेखन किया है। इससे उनकी बहुविध प्रतिभा का पता चलता है। हिंदी साहित्य के निर्माण के क्षेत्र में सर्वेश्वर जी का स्थान विशिष्ट है, जो अपनी अलग पहचान रखता है। उनकी पहचान पाठकों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों के अध्ययन के पश्चात कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी दृष्टि समाज में व्याप्त भ्रष्ट नीतियों का पर्दाफाश करना , साथ ही राजनीति का शोषणमूलक स्वरूप समाज को दिखाना तथा समाज परिवर्तन लाने पर केंद्रीत की है। भारतीय समाज की गरीबी और राजनीतिक विसंगतियों का चित्रण सर्वेश्वर जी ने अपने नाटकों में

बखुबी के साथ किया है। विवेच्य नाटक के अधिकांश पात्र क्रांतिकारी , देहात में रहने वाले , व्यवस्था तले दबे हुए हैं। उनके नाटक प्रायः राजनीतिक नाटक की श्रृंखला में आते हैं। विवेच्य नाटकों के संवाद कथावस्तु का विकास करने में सफल हैं। ये संवाद पात्रों के चरित्र के अनुरुप तथा उसे स्पष्ट करने में सक्षम है। विवेच्य नाटकों की भाषा खडीबोली और ग्रामीण पद्धति की है। विवेच्य नाटक अपने उद्देश्य को सफल करने में सहायक हुए है।

अभिनय नाटक का प्राण तत्व होता है। नाटक में निहीत भावों के निर्माण का वह प्रभावशाली माध्यम है। अभिनय का उद्देश्य नाटक के कथ्य को निर्देशक की दृष्टि से पूर्ण प्रभाव के साथ प्रेक्षकों तक पहुँचाना होता है।

हिंदी नाटक में अभिनय का प्रारंभ सन् १८३३ ई. में अभिनीत 'विद्याविलास' नाम के मैथिली नाटक से हो चुका था। हिंदी नाटक के अभिनय परंपरा को भारतेंदु युग , प्रसाद युग , प्रसादोत्तर युग और साठोत्तरी युग ऐसे सोपानों में विभाजित किया जाता है। भारतेंदु जी ने अभिनय की नई परंपरा शुरु की। भारतेंदु युग अभिनय की दृष्टी से प्रयोगकाल रहा है। भारतेंदु युगीन नाटकों में तकनीकी त्रुटियाँ दिखाई देती हैं। अभिनेयता की दृष्टि से प्रसाद युग की नाट्यकला में क्रमिक विकास होता रहा। प्रसाद के नाटक अभिनेयता की दूष्टि से असफल रहे हैं। भारतेंदु युग के बाद जिस गति से अभिनय कला का विकास होना चाहिए था , वह हो नहीं सका। फिर भी अभिनय के लिए कम-अधिक मात्रा में नये प्रयोग किये गये। प्रसाद के बाद हिंदी नाटक साहित्य में एक नवीन युग का आरंभ हुआ। प्रसादोत्तर युग के नाटक अधिकतर रंगमंच और अभिनय आदि बातों को सामने रखते हुए लिखे गए। प्रसादोत्तर काल में नाटक में अभिनय को प्रौढत्व प्राप्त हुआ। सन् १९६० ई.के बाद हिंदी नाटक को नई दिशाा प्राप्त हो गई। इसी काल में हिंदी रंगमंच का सर्वाधिक विकास हुआ। अनेक नाटककार सामने आये और उन्होंने श्रेष्ठ अभिनेय नाटक हिंदी को दिए। अभिनय की दृष्टि से हिंदी के सभी नाटक बहुआयामी प्रतीत होते हैं। इस काल में लोक रंगमंच और शास्त्रीय परंपरा का समिश्रण पाया जाता है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने जिन नाटकों का निर्माण किया है , वे श्रेष्ठ दर्जा के हैं । उन्होंने अपने नाटक में पारसी रंगमंच और नौटंकी शैली का एकत्रित प्रयोग कर दोनों शैलियों का केंद्रीय तत्व निर्माण किया है । अभिनय में संगीत और नृत्य की लुप्त होती धारा को सक्सेना जी ने पुनर्जिवित किया । ग्रामीण प्रेक्षकों को ध्यान में रखकर उन्होने नाटक का निर्माण किया है। स्पष्ट है सक्सेना की नाटक क्षेत्र में बडी उपलब्धि है ।

अभिनय नाटक का प्राण तत्व है । इसका नाटक में अनन्यसाधारण महत्त्व प्राप्त हुआ है । अतएव पूरे नाटक की रचना अभिनय को केंद्र में रखकर की जाती है । नाटक के अन्य तत्वों की योजना भी अभिनय के अनुसार की जाती है । अभिनय और कथावस्तु का गहरा संबंध होता है । दोनों एक दूसरे पर निर्भर होते हैं । कथावस्तु के साथ अभिनय कला का विकास होता है । 'बकरी' नाटक की कथावस्तु के क्रिया-व्यापार को विकसित करने के लिए संघर्षमय घटना की योजना की है । दर्शक को नाटक की प्रवृत्ति , समय , घटना-स्थल आदि का परिचय प्राप्त होता है । बकरी नाटक की कथावस्तु अभिनय के योग्य है । 'लडाई' नाटक की कथावस्तु में सक्सेना जी ने तत्कालीन परिस्थिति को जीवंत अभिनय द्वारा दर्शकों के सम्मुख रखा है । नाटक की कथावस्तु चौदह दृश्यों में विभाजित है । प्रत्येक दृश्य अलग-अलग स्थान और समय से घटित होते हैं । कथानक में बिखराव होने के बावजुद दर्शकों की उत्सुकता बनी रहती है । कथावस्तु में संघर्ष मानसिक , वैचारिक , सैद्धांतिक , होने के कारण अभिनय का महत्त्व अपेक्षाकृत और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है । 'अब गरीबी हटाओ' नाटक की कथावस्तु का अभिनय की दृष्टि से सही विकास हुआ है । इसकी कथावस्तु सात दृश्यों में विभाजित है । इसतरह सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपनी अभिनय कला का परिचय बड़ी कुशलता के साथ दिया है ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों के पात्र सामान्य हैं । नाटक में आये पात्रों की विशेषता एकदम स्पष्ट है , जो अभिनेता के लिए उसे अपना अध्ययन करने में बडी सरलता महसूस होती है । सक्सेना के नाटकों में कहीं-कहीं पात्रों की भीड़ नजर आती है । इनके

नाटकों में कम से कम ११ और ज्यादह से ज्यादह ५० पात्र रहे हैं। यहाँ पर गौण पात्रों की संख्या अधिक हैं। इसके कारण पात्रों की भीड निर्माण हो गई है। फिर भी मुख्य अभिनेता को अधिक सक्रिय रहने का अवकाश मिला है। मुख्य पात्र नाटक के अंत तक सक्रिय रहते हैं। नाटक के पात्रों में नाटककार का व्यक्तित्व झाँकता हुआ नजर आता है। नाटक के पात्र अभिनेय हैं।

नाटक की प्रायोगिकता का मूल आधार रंगमंच है। विषय तथा कथ्य की दृष्टि से उत्तम कोटि का 'बकरी' नाटक मंचीय प्रस्तुति में प्रभावी और यशस्वी हो चुका है। सक्सेना ने अपने नाटकों में समकालीन व्यवस्था के असली रुप को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'बकरी', 'लडाई', 'अब गरीबी हटाओ' आदि नाटक रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से सफल नाट्यकृतियाँ हैं।

विवेच्य नाटकों में नाटककार ने अभिनय संबंधी पर्याप्त मात्रा में रंग-निर्देश दिये हैं। कायिक, वाचिक, आंगिक अभिनय के साथ-साथ सात्विक अभिनय के अवसर भी प्रदान किये हैं। सर्वेश्वर ने निर्देशक को नाटक प्रस्तुति में स्वतत्रंता दे दी है। उन्होंने अपनी ओर से अधिक निर्देशन सूचनाएँ नहीं दी हैं। उनके नाटक निर्देशन के लिए उपयुक्त और आसान हैं। रुपसज्जा तथा दृश्यसज्जा विषयक समग्र रंग संकेत नाटककार ने उचित रुप से दिये हैं। दृश्य के अनुरूप तथा आर्थिक स्तर के अनुरुप परिवर्तित रुपसज्जा विषयक संकेत नाटककार ने दिये हैं।विवेच्य नाटकों के मंचन के लिए खास प्रकार की दृश्यसज्जा की आवश्यकता नहीं हैं सक्सेना के नाटक कहीं भी, किसी भी समय कम खर्चे में खेले जा सकते हैं। खुले रंगमंच पर भी नाटकों का मंचन संभव होता है।

विवेच्य नाटकों में नाटककार ने प्रकाश-व्यवस्था का प्रयोग घटना अथवा समय के अनुसार किया है। प्रकाश-योजना का खास प्रयोग अंक तथा दृश्य विभाजन के साथ-साथ वातावरण निर्मिती के लिए भी किया है। ध्वनि-योजना का उपयोग प्रसंग, घटना के अनुरुप किया गया है।

संवाद की दृष्टि से सर्वेश्वर के नाटक में विविधता है। नाटक में लम्बे संवादों को स्थान नहीं हैं। छोटे-छोटे संवाद दर्शक प्रिय हैं। पात्रानुकुलता , प्रभावक्षमता , रोचकता नाटकीयता आदि उनके संवादो के विशेष गुण हैं। भाषा अभिनय के अनुकूल रही है। विवेच्य नाटकों के संवादों में खडीबोली , देहाती भाषा का प्रयोग हुआ है। विवेच्य नाटक दर्शकीय संवेदना को झकझोर देनेवाले तथा दर्शक को प्रभावित करने में सफल हुए हैं। सक्सेना के नाटक अभिनय की दृष्टि से परिपूर्ण हैं , इसीलिए उनके नाटकों का मंचन स्वदेश में ही नहीं , अपितु परदेश में भी सफलता के साथ हुआ है।

अतःसर्वेश्वर जी के विवेच्य नाटक अभिनेयता की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट और सफल नाटक रहे हैं।

उपलब्धि :-

संक्षिप्त में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के इन आलोच्य नाटक के अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित तथ्य सामने उभरकर आ जाते हैं -

१. इन आलोच्य नाटकों की कथावस्तु अभिनय की दृष्टि से यथायोग्य है।
२. विवेच्य नाटकों के पात्र अभिनय में सक्षम , गतिशील हैं।
३. नाटकों की अभिनय विशेषताओं पर सभी नाटक खरे उतरते हैं।
४. आलोच्य नाटक अभिनेयता की दृष्टि से सफल हैं , उनमें अभिनय पर समग्रता के साथ विचार किया है।
५. इन नाटकों में नाटककार का उद्देश्य सफल हो चुका है।

अध्ययन की नयी दिशाएँ

१. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में चित्रित समस्याओ का अनुशीलन।
२. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन।
३. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में राजकीय संवेदना।

उक्त विषयों पर अध्ययन किया जा सकता है।